प्रेमचंद और डब्लिव. ए. सिल्वा के उपन्यासों में प्रतीयमान नारीः तुलनात्मक अध्ययन (चयनित तीन उपन्यासों के संदर्भ में)

Female Characters Represented in Novels of Premchand and W. A. Silva: Comparative Study (From Selected Three Novels)

By

जयवीर आरच्चिगे दोन सरसि उपेक्षिका रणसिंह

Jayaweera Arachchiage Dona Sarasi Upekshika Ranasinghe

दर्शनसूरी **Ph.D.** 2018

प्रेमचंद और डब्लिव. ए. सिल्वा के उपन्यासों में प्रतीयमान नारीः तुलनात्मक अध्ययन

(चयनित तीन उपन्यासों के संदर्भ में)

Female Characters Represented in Novels of

Premchand and W. A. Silva: Comparative Study

(From Selected Three Novels)

By

जयवीर आरच्चिगे दोन सरसि उपेक्षिका रणसिंह

Jayaweera Arachchiage Dona Sarasi Upekshika Ranasinghe

श्री जयवर्धनपुर विश्वविद्यालय की दर्शनसूरी उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध निंबंध

Thesis submitted to the University of Sri Jayewardenepura

for the award of the Degree of Doctor of Philosophy in Hindi

2018

शोधार्थी की घोषणा

Declaration of Candidate

घोषित किया जाता है कि प्रस्तुत शोध–निबंध की रचना मैंने शोध निर्देशक प्रो. लक्ष्मण सेनेविरत्न जी (हिंदी विभाग, केलणिय विश्वविद्यालय) के पूर्ण मार्गोपदेशन में की थी तथा इसे किसी अन्य विश्वविद्यालय/संस्थान को किसी अन्य उपाधि/डिप्लोमा हेतु प्रस्तुत नहीं किया है।

The Work described in this thesis was carried out by me under supervision of Senior Professor Lakshman Senevirathne and a report on this has not been submitted in whole or in part to any University or any other institution for another Degree/Diploma.

………………………………… ……………………………..

J. A. D. S. U. Ranasinghe Date

शोध निर्देशक की संस्तुति

Recommendation of Supervisor

प्रमाणित किया जाता है कि शोधार्थी का पूर्वोक्त कथन सच है तथा प्रस्तुत निबंध श्री जयवर्धनपुर विश्वविद्यालय के निर्धारित उपाधि के मूल्यांकन के लिए सुयोग्य है।

I have certify that the above statement made by the candidate is true and that this thesis is suitable for submission to the University of Sri Jayewardenepura for the purpose of evaluation.

....

Signature of Supervisor Date

Senior Professor Lakshman Senevirathne (Department of Hindi)

Deputy Vice Chancellor

University of Kelaniya

Sri Lanka.

अनुक्रमणिका

पृष्ट अंक

अनुक्रमणिका..i

आमुख..v

सारांश (अंग्रेज़ी)..vii

सारांश (हिंदी)..ix

प्रथम अध्याय

1. शीर्षक का परिचय..1

द्वितीय अध्याय

2. साहित्य समीक्षा..20

तृतीय अध्याय

3. स्रोत सामग्री एवं विधि..28

चतुर्थ अध्याय

4. हिंदी और सिंहली उपन्यास का उद्भव और विकास

4.1. हिंदी उपन्यास का उद्भव और विकास..32

4.2. सिंहली उपन्यास का उद्भव और विकास..49

पंचम अध्याय

5. प्रेमचंद और डब्लिव.ए सिल्वा का व्यक्तित्व और कृतित्व

5.1. प्रेमचंद का व्यक्तित्व और कृतित्व

5.1.1. प्रेमचंद का व्यक्तित्व..57

5.1.2. प्रेमचंद का कृतित्व.....70

5.2. डब्लिव. ए. सिल्वा का व्यक्तित्व और कृतित्व

5.2.1. डब्लिव. ए. सिल्वा का व्यक्तित्व.....102

5.2.2. प्रेमचंद का कृतित्व.....113

षष्ठ अध्याय

6. प्रेमचंद और डब्लिव. ए. सिल्वा की युग परिस्थितियाँ

6.1. प्रेमचंद की युग परिस्थितियाँ.....135

6.1.1. राजनीतिक परिस्थिति.....136

6.1.2. आर्थिक परिस्थिति.....141

6.1.3. सामाजिक परिस्थिति.....144

6.1.4. धार्मिक एवं सांस्कृतिक परिस्थिति.....147

6.1.5. साहित्यिक परिस्थिति.....151

6.2. डब्लिव. ए. सिल्वा की युग परिस्थितियाँ.....156

6.2.1. राजनीतिक परिस्थिति.....156

6.2.2. आर्थिक परिस्थिति.....160

6.2.3. सामाजिक परिस्थिति.....166

6.2.4. धार्मिक एवं सांस्कृतिक परिस्थिति.....169

6.2.5. साहित्यिक परिस्थिति.....172

सप्तम अध्याय

7. प्रेमचंद और डब्लिव. ए सिल्वा युगीन नारी की स्थिति

7.1. प्रेमचंद युगीन नारी की स्थिति.....178

7.2. सिल्वा युगीन नारी की स्थिति.....227

अष्टम अध्याय

8. प्रेमचंद और डब्लिव. ए. सिल्वा के उपन्यासों में प्रतीयमान नारी

8.1. प्रेमचंद के उपन्यासों में प्रतीयमान नारी.....255

8.1.1. नारी का जन्म एवं बचपन.....257

8.1.2. नारी की शिक्षा–दीक्षा.....259

8.1.3. नारी का यौवन और प्रेम.....262

8.1.4. नारी का विवाह.....264

8.1.5. पत्नी.....279

8.1.6. माता.....290

8.1.7. विधवा.....296

8.1.8. दलित और निम्न वर्गीय नारी.....300

8.1.9. आधुनिक नारी.....304

8.2. डब्लिव.ए.सिल्वा के उपन्यासों में प्रतीयमान नारी.....311

8.2.1. नारी का जन्म एवं बचपन.....311

8.2.2. नारी की शिक्षा–दीक्षा.....312

8.2.3. नारी का यौवन और प्रेम.....314

8.2.4. नारी का विवाह.....318

8.2.5. पत्नी.....321

8.2.6. माता.....324

8.2.7. विधवा.....325

8.2.8. दलित और निम्न वर्गीय नारी.....327

8.2.9. आधुनिक नारी.....329

नवम् अध्याय

9. प्रेमचंद और डब्लिव.ए.सिल्वा के उपन्यासों में प्रतीयमान नारी : समानताएँ और असमानताएँ

9.1. नारी का जन्म एवं बचपन....................331

9.2. नारी की शिक्षा–दीक्षा....................333

9.3. नारी का यौवन और प्रेम....................336

9.4. नारी का विवाह....................339

9.5. पत्नी....................343

9.6. माता....................348

9.7. विधवा....................352

9.8. दलित और निम्न वर्गीय नारी....................355

9.9. स्त्री बलात्कार....................358

9.10. आधुनिक नारी....................359

उपसंहार....................362

संदर्भ ग्रंथ सूची 372

आमुख

सन् 2010 में हिंदी में बी.ए उपाधि प्राप्त करने के पश्चात हिंदी में शोधकार्य करने की इच्छा बढ़ती जा रही थी। बचपन से ही मैंने यह अनुभव किया था कि अधिकतर हमारे पूर्वी देशों में घर में, बस में, दफ़्तर में या रास्ते में नारी की स्थिति सुरक्षित नहीं है। बचपन से ही मैं नारी से संबंधित सिंहली उपन्यास और कहानियाँ पढ़ती रही। विश्वविद्यालयीय जीवन में मुझे अनेक हिंदी लेखकों के उपन्यासों और कहानियों को पढ़ने का मौका मिला। मेरे मन में उनमें ंनिरूपित उत्तर भारत की नारियों के प्रति बड़ी सहानुभूति उत्पनन हुई। साथ ही विशेषतः नारी के प्रति हिंदी साहित्य के उपन्यास सम्राट प्रेमचंद के विचारों और दृष्टि के साथ एक लगाव भी हुआ। प्रेमचंद के सारे उपन्यासों का अध्ययन करने के बाद मेरे मन में यह समस्या उत्पन्न हुई कि प्रेमचंद के उपन्यासों में पीडित नारी का निरूपण क्यों हुआ है? अतः 'प्रेमचंद और डब्लिव. ए सिल्वा के उपन्यासों में प्रतीयमान नारी का तुलनात्मक अध्ययन' शीर्षक पर मैंने दोनों उपन्यासकारों के केवल तीन उपन्यासों को लेकर उनमें निरूपित नारी जीवन का अध्ययन किया। वास्तव में प्रेमचंदजी और उनकी कृतियों पर काफ़ी अनुसंधान हुए हैं, पर मेरे ज्ञान के अनुसार प्रस्तुत शीर्षक पर कोई अनुसंधान नहीं हुआ है। इसलिए मैंने दोनों के व्यक्तिगत जीवनों, युग परिस्थितियों और नारी स्थिति आदि का अध्ययन करते हुए दोनों के उपन्याासों में प्रतीयमान नारी की तुलना की।

इस शोध निबंध में नौ अध्याय है। प्रथम अध्याय में आमुख, द्वितीय अध्याय में साहित्य समीक्षा, तृतीय अध्याय में स्रोत समग्री एवं विधि है। चतुर्थ अध्याय से नवम अध्याय तक शोध कार्य चर्चित है। चतुर्थ अध्याय में मैंने संक्षेप में हिंदी एवं सिंहली उपन्यास के उद्भव एवं विकास की चर्चा की। इस अध्याय में मैंने दिखाया कि हिंदी साहित्य पर प्रेमचंद का योगदान और सिंहली साहित्य पर सिल्वा का योगदान कैसा था। किसी भी साहित्य की मूल आत्मा को पहचानने के लिए उनके

रचयिता के व्यक्तिगत जीवन का अध्ययन भी अत्यावश्यक है। इसलिए पंचम अध्याय में मैंने दोनों उपन्यासकारों के जीवन तथा व्यक्तित्व को प्रकाश में लाने का प्रयत्न किया। साहित्य समाज का दर्पण है, क्योंकि हरएक लेखक अपनी युगीन परिस्थितियों से प्रभावित होता ही है। अतः षष्ठम अध्याय में प्रेमचंद जी और सिल्वा जी की युगीन परिस्थितियों का विवरण किया गया है।

सप्तम अध्याय में दोनों के युगों की नारी की स्थितियों, नारी से संबंधित सोच विचारों और व्यवहारों की चर्चा की गयी है। और अष्ट अध्याय में प्रेमचंद और सिल्वा के उपन्यासों के द्वारा प्रतीयमान नारी की चर्चा जन्म, बचपन, शिक्षा, यौवन, विवाह, पत्नी, माता, विधवा, वेश्या, निम्नवर्गीय नारी और आधुनिक नारी आदि के रूप में की गयी है। और नवम अध्याय में उसी क्रम के अनुसार दोनों के द्वारा निरूपित नारी पात्रों की तुलना की गयी। उपसंहार के अंतर्गत समस्त अध्यायों का निष्कर्ष प्रस्तुत किया गया है। आश्रित ग्रंथावली में प्राथमिक और द्वितीय स्रोतों की सूचि दी गयी है।

शोध कार्य में समय समय पर उपस्थित होनेवाली कठिनाइयों के समाधान और समुचित दिशा निर्देश के लिए मैं अपने निर्देशक आदरणीय प्रॉ. लक्ष्मण सेनेविरत्न जी के प्रति हृदय से सदा आभारी हूँ। सामग्री संकलन से लेखन कार्य के लिए जो सहायता और प्रोत्साहन मुझे अपने देश के और भारत के अध्यापकों, प्राध्यापकों और दोस्तों से मिला है, उनके प्रति भी मैं अपना आभार प्रकट करती हूँ। अंत में मैं अपने देव तुल्य पति का हृदय से आभार प्रकट करती हूँ, जिन्होंने गृहस्थी के अधिकांश भार को अपने कंधों पर लेकर मेरे इस कार्य को सुगम बना दिया।

सरसि रणसिंह

Female Characters Represented in Novels of

Premchand and W. A. Silva: Comparative Study

J. A. D. Sarasi Upekshika Ranasinghe

ABSTRACT

The novel as a portrayal of a personage in art form and a depiction of concealing intellect of human being. Two noble writers namely Premchand - Indian writer and his contemporary W. A. Silva - Sri Lankan writer yielded their lives to depict the closeness of people with the society and to develop a better environment for the living being. Premchand pioneered and contributed immensely to the upliftment of the standard of sensible and practical Hindi novel than any other. Premchand diverted Hindi novel into real-life stories and he mostly discussed the facts of the underprivileged people's life stories. A deprived woman played a significant role in his novels. But his contemporary in Sri Lanka W. A. Silva did not pay much attention to the destitute woman in his novels. Due to this reason, it is worth to compare and contrast the characters of women depicted in the stories written by two authors of the two countries. Therefore the uncertainty of this observation, i.e. why Premchand has introduced deprived women in his stories than W. A. Silva, is the fact that we attempt to discuss through this study. Both qualitative methodology and comparative methodology have been applied for this study. Similarly, to gather information regarding factors primary and secondary sources have been associated. . Historical background, elementary publications and discussions with Indian

and Sri Lankan scholars of Hindi Literature have been incorporated in primary sources. There have been so many researches in connection with Premchand's novels. Since no research has been carried out regarding the role of the women in Premchand's and W. A. Silva's novels, hence the importance of this study is to evaluate comparatively the position held by women in these two neighboring countries. Three novels by Premchand namely 'Prathigyā, 'Nirmalā' and 'Gōdān' and three novels by W. A. Silva namely 'Pāsal Guruwarī, 'Daiwayōgaya' and 'Hingana Kollā' have been utilized for this research. Premchand was born in a very rural, poor stricken village. So, he experienced the deprived living conditions of the underprivileged. Further, he lived during the British rule. In the society, Sathi-poojā, premature marriage, dowry, restrictions for widows to enter remarriage, un-matching marriages with elderly, prevention from education for women and prostitution have been strongly depressed the average people. And Hinduism is the main religion in India. In this stream, the woman has been described as a prisoner within the house. In the meantime, W. A. Siva who hailed from a middle-class family did not attempt such characters. This is quite clear because his environment did not depict such a pathetic situation in women's life. The very reason for this difference is the Buddhist believes among the Sri Lankan society. So, the women in Sri Lanka did not experience such hardships as in India. She enjoyed free education, her character was noble and lived with dignity even under the man's authority. In view of above observations we can come to a conclusion the personal, social, religious environment and underprivileged existence of Premchand have influenced him to introduce downtrodden woman in his novels than W. A. Silva. From all these facts it is evident that In any society, if the woman is educated, liberated from economic worries and weather she holds the proper position, there she will be free from inequitable experiences and the development of the society is inevitable.

प्रेमचंद और डब्लिव. ए. सिल्वा के उपन्यासों में प्रतीयमान नारीः तुलनात्मक अध्ययन

जे. ए. डी. सरसि उपेक्षिका रणसिंह

सारांश

हम उपन्यास को गद्यमय कल्पित आख्यान के माध्यम से की गयी जीवन की व्याख्या कह सकते हैं। उपन्यासकार निरंतर समाज का यथार्थ ढूँढने का प्रयत्न करता रहता है। इस प्रकार मानव समाज के यथार्थ को पाठकों के सामने ले आने का प्रयत्न किये हुए दो लेखक हैं, हिंदी लेखक 'प्रेमचंद' और उनके समकालीन सिंहली लेखक 'डब्लिव. ए. सिल्वा'। हिंदी साहित्य में प्रेमचंद ने ही सर्वप्रथम यथार्थवादी रूप से उपन्यास लिखना आरंभ किया। प्रेमचंद के द्वारा ग्यारह उपन्यासों की रचना की गयी है और एक असंपूर्ण है। 'डब्लिव.ए. सिल्वा' भी प्रेमचंद के समकालीन एक ऐसे सिंहली उपन्यासकार हैं, सिंहली उपन्यास क्षेत्र पर जिनका आगमन सन् 1907 में हुआ। उनके द्वारा बारह उपन्यासों की रचना हुई है। इन दोनों उपन्यासकारों के उपन्यासों का अध्ययन करने पर हमें यह ज्ञात होता हैं कि दोनों ही लेखकों ने अपने उपन्यासों में सबसे ज़्यादा नारी को विशेष स्थान दे दिया है। पर इस अध्ययन की समस्या यह हुई कि सिल्वा से ज़्यादा प्रेमचंद के द्वारा पीडित नारी का ही निरूपण क्यों हुआ है? इसका कारण ढूँढ़ने के लिए मैंने गुणात्मक अध्ययन क्रम विधि के अनुकूल दोनों देशों की नारी से संबंधित व्यवहारों तथा सोच विचारों का अध्ययन गहराई से किया। फिर तुलनात्मक अध्ययन क्रम विधि के अनुकूल दोनों के उपन्यासों में प्रतीयमान नारी पात्रों की तुलना की। और सामग्री एकत्रित करने के लिए प्राथमिक और द्वितीय स्रोतों का प्रयोग किया। प्रेमचंद और डब्लिव. ए. सिल्वा के तीन तीन उपन्यासों क्रमशः 'प्रतिज्ञा', 'निर्मला', 'गोदान' तथा 'पासल गुरुवरी', 'हिगँन कॉल्ला', 'दैवयोगय' को लेकर उनमें प्रतीयमान नारी पात्रों की तुलना

की। और सामग्री एकत्रित करने के लिए प्राथमिक और द्‌वितीय स्रोतों का प्रयोग किया। वास्तव में प्रेमचंद की जीवन गाथा अत्यंत दयनीय थी। इसलिए उन्होंने अत्यंत करीब से पहचाना था कि गरीब ग्रामीण मनुष्यों के जीवन का यथार्थ क्या है? विशेष रूप से उन्होंने पीडित नारी को मुख्य स्थान दे दिया। इसलिए ही उन्होंने अपने वास्तविक जीवन में तत्युगीन समाज में प्रचलित विधवा विवाह के निषेध का खंडन करते हुए एक बाल विधवा से विवाह किया, क्योंकि उनके तत्युगीन समाज में बाल विवाह, अनमेल विवाह, वृद्‌ध विवाह, बहु विवाह, दहेज प्रथा, विधवा विवाह का निषेध, स्त्री शिक्षा का निषेध, वेश्या प्रथा, सती प्रथा एवं स्त्री बलात्कार आदि अनेक कुरीतियाँ फैली हुई थीं। इतना ही नहीं पुरातन से मनुस्मृति आदि हिंदू धर्म के शास्त्र ग्रंथों की नीति रीतियों के द्‌वारा नारी को पुरुष की दासी बना दी गयी थी। और प्रेमचंद युगीन नारी आर्थिक विपन्नताओं से ग्रस्त थीं, स्वतंत्र न थी। पर सिल्वा का जन्म नागरिक मध्यवर्गीय परिवार में हुआ। उनके समाज में पुरुष के अधीन रहते हुए भी नारी स्वतंत्र थी। क्योंकि सिल्वा युगीन समाज में सती प्रथा, स्त्री शिक्षा का निषेध, विधवा विवाह का निषेध, पर्दा प्रथा, अनमेल विवाह, वृद्‌ध विवाह, बाल विवाह जैसी अतिभयंकर कुप्रथाएँ नहीं थीं। उनकी साक्षरता का स्तर भी समकालीन अन्य पूर्वी देशों से ज़्यादा उच्च था। इन सबका मूलभूत कारण बौद्‌ध धर्म था। क्योंकि बौद्‌ध दर्शन के अनुकूल हर एक नारी को सम्माननीय जगह मिली थी। इसी कारण सिल्वा के द्‌वारा अधिकतर पुरुषों के अधीन रहते हुए भी स्वतंत्रता से जीनेवाली उदार और बुद्‌धिमान नारियों का निरूपण हुआ है। इन सभी तथ्यों के अध्ययन करने पर अंत में मैंने यह फल पाया कि समकालीन उत्तर भारत की सामाजिक कुरीतियों, हिंदू धर्म की कट्‌टर नीति–रीतियों, नारी की दयनीय आर्थिक स्थिति और प्रेमचंद के वास्तविक जीवन के अनुकूल सिल्वा से ज़्यादा प्रेमचंद के उपन्यासों में अधिकतर पीडित नारी का ही निरूपण हुआ है। इस समस्त शोध निबंध के अनुकूल मेरा निर्देश यह है कि जहाँ समस्त नारी जाति शिक्षित होगी, आर्थिक विषमताओं से स्वतंत्र होगी, धार्मिक और सामाजिक बंधनों से मुक्त होगी, नारी के प्रति पुरुष की दृष्टि सुंदर होगी और नारी को भी समाज में उसकी योग्य जगह मिलेगी, वहाँ नारी पर होनेवाले अत्याचार कम होंगे।